Relevance in Poetry of Jain Poet Anandghan and Kabir - A comparative study by

Dr. B.C. Rawat.

जैन कवि आनंदघन एवं संत कबीर के काव्य में प्रासंगिकता

तुलनात्मक अध्ययन

© Dr. Bharati C. Ravat

पुस्तक के किसी भी भाग या समुचित पुस्तक का किसी अन्य स्वरूपमे इस्तेमाल करने या फोटो कॉपी करने से पहले लेखक की पूर्व सम्मति लेना आवश्यक है। वर्ना उसे कोपी राइट एक्ट का उल्लंघन माना जाएगा और ये क़ानूनी तौर पर अपराध है।

Imprint

Jain Kavi Anand Ghan Aur Sant Kabir ke Kavyame Prasagikta

by Green Flag Foundation

ISBN 978-93-86366-25-2

प्रकाशन वर्ष **(प्रथम आवृति)**

जनवरी , २०१६

टाइप & सेटीग

भरत बी. पटेल

एक्सेलेंस कोम्पुटर सेन्टर , हिमतनगर

प्रिन्टिंग & बाइंडिंग

भगवती प्रिंटिंग प्रेस, हिमतनगर

प्रकाशक

ग्रीन फ्लेग फाउंडेशन

सोनासण, जिल्ला :साबरकांठा , गुजरात राज्य , पिन,३८३२१०

एक प्रत का मुल्य: 425/- रु.

अनुक्रमणिका

विषय	पाना.नं.
का रचनात्मक वैशिष्ट्य	1-44
कबीर	45-91
आनन्दघन	92-130
संत कबीर के तुलनात्मक अध्ययन	131-255
ाव्य का रचना कौशल	256-338

अध्याय-1
आनंदघन और कबीर का रचनात्मक वैशिष्ट्य

खण्ड-1 आनंदघन का रचनात्मक वैशिष्ट्य

प्रस्तावना

आनंदघन अपने समय के पहुँचे हुए महात्मा एवं सच्चे अध्यात्मावादी कवि थे । मध्यकाल के संत आनंदघन ने गुजराती के साथ हिन्दी में रचना कर गुजरात की प्रान्तीय सीमाओं को पार कर राष्ट्रीय सीमा में प्रवेश कर भारत की संस्कृति को अपने पदों में झंकृत किया था जिसकी वाणी आज भी प्रासंगिक है ।

भारतीय सभ्यता को विकासोन्मुख बनाये रखने में विभिन्न संतो का योगदान रहा है । संत आनंदघन इन्हीं संतो की परम्परा के अनमोल रत्न है । आनंदघन में अद्भुत कवित्व प्रतिभा विद्वता है, विद्वानों ने आनंदघन को 'अध्यात्म का आलोक' कहा है । उनकी आध्यात्मिक मस्ती निराली थी । वे योगी थे, कबीर मीरा, जायसी आदि प्रेमकवियों की तरह इनके काव्यों में भी प्रेम की धारा गतिशील रही। आनंदघन की भक्ति-साधना अनुभव क्षेत्र की अजोड प्रतिभा थी । आनंदघन आत्मानुभयी रहस्यवादी कवि एवं परमोच्च कोटि के भक्त थे । अपनी रहस्यानुभूति को कवि ने कबीर की भाँति उलटवासियों एवं गूढोक्तियों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है । संत परंपरा में आपका विशेष स्थान बना है ।

आनंदघन महान विचारक एवं प्रतिभा सम्पन्न महापुरुष थे । जैनकवियों में उनका शीर्षस्थ स्थान है । उन्होंने अपनी आत्मा में जाग्रत रहस्यानुभूतियों को केवल स्वयं तक ही सीमित न रखकर जन सामान्य तक प्रेषित किया ताकि साधारण जन भी अपनी आत्मा में स्थित परमात [illegible]त्व को जान सके । महात्मा आनंदघन आध्यात्मिक ज[illegible] के जगमगाते प्रकाशपुंज हैं, यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है । अध्यात्म योगी आनंदघन की कृतियों में कहीं भी उनके

लेखक परीचय

नाम :- डो. भारती सी रावत

शिक्षा :- एम.ए, पीएच.डी (हिन्दी)

समप्रति :- हिन्दी अध्यापिका

जी. डी. मोदी कोलेज, पालनपुर, जि. बनासकांठ

प्रकाशन :

- सेमीनारों में लेख प्रस्तुती, विविद्य राष्ट्रीय व आंतर
  प्रकाशन में लेख ।
- कोलेज स्पोर्ट विभागमें प्रतिवर्ष सराहनिय कार्य । वि
  प्रोत्साहन ।
- संगीत, साहित्य, महिला जागृति, और समाजसेवा में

पता : वृन्दावन सोसायटी, वर्कशोप के पास,

पालनपुर, जि. बनासकांठा (गुजरात) ३८५००१

मो. 9825268153